एम.एड. पाठ्यक्रम एवं नियमावली

1. एम. एड पाठ्यक्रम में कुल सात प्रश्नपत्र होंगे । प्रत्येक प्रश्नपत्र के लिए 100 अंक निर्धारित हैं। उत्तीर्ण होने के लिए प्रत्येक प्रश्नपत्र में 36 प्रतिशत अंक प्राप्त करने होगें। द्वितीय श्रेण्ीा के लिए 48 प्रतिशत से अधिक एवं 60 प्रतिशत से कम अंक तथा प्रथम श्रेणी के लिए 60 प्रतिशत अथवा 60 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने होंगे।
2. प्रश्नपत्रों का विवरण इस प्रकार है–

(अ) अनिवार्य प्रश्नपत्र

प्रथम प्रश्नपत्र	: शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार	100
द्वितीय प्रश्नपत्र	: शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार	100
तृतीय प्रश्नपत्र	: शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी	100

(ब) वैकल्पिक प्रश्नपत्र

चतुर्थ एवं पंचम प्रश्नपत्र–	निम्नलिखित में से कोई दो प्रश्नपत्र चयन करने होंगे–	
	क. शिक्षण व्यवहार की तकनालाजी	100
	ख. तुलनात्मक शिक्षा	100
	ग. शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श	100
	घ. दूरस्थ शिक्षा	100
	च. अभिक्रमित अधिगम की तकनालॉजी एवं शैक्षिक साफ्टवेयर अभिकल्प	100
	छ. कम्प्यूटर सह–अधिगम एवं शिक्षण	100
	ज. शैक्षिक प्रबन्धन एवं प्रशासन	100
	झ. विशिष्ट बालकों की शिक्षा	100
	ट. मूल्य एवं शान्ति शिक्षा	100
षष्ठ प्रश्नपत्र	लघुशोध प्रबन्ध	100
सप्तम प्रश्नपत्र–	मौखिकी एवं इकाई परीक्षण	100

(इसके अन्तर्गत इकाई परीक्षण पर 75(15x5) अंक एवं सभी प्रश्नपत्रों की वृहद् मौखिकी पर 25 अंक होंगे) किन्तु अंक पत्र में दोनों का योग दर्शाया जायेगा ।

3. इन सभी पाठ्यक्रमों को विभागाध्यक्ष अपने विभाग में उपलब्ध सुविधानुसार नियमित रूप से प्रवेश प्राप्त विद्यार्थियों के लिए लागू कर सकते है।
4. एम. एड. में प्रवेश विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित प्रवेश परीक्षा अथवा शासनादेश के अनुसार योग्यतांक के आधार पर किया जायेगा।
5. एम. एड. की परीक्षा एक सत्र में पूरी की जायेगी।
6. विभागाध्यक्ष अपनी विभागीय समिति की सहायता से एम. एड. के विद्यार्थियों के लिए परीक्षा में सम्मिलित होने की अर्हता सुनिश्चित करेगें। प्रत्येक विद्यार्थी को इस हेतु अर्हता अर्जित करने के लिए 75 प्रतिशत उपस्थिति पूरी करनी होंगी। पाठ्यक्रम के लिए अपेक्षित गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए कुलपति द्वारा समय–समय पर विभागाध्यक्ष के संयोजकत्व में एक समिति गठित की जाएगी। जिसकी संस्तुतियों को समय–समय पर लागू किया जायेगा ।
7. लघुशोध प्रबन्ध का मूल्यांकन आन्तरिक व वाह्य परीक्षक पृथक–पृथक करेगे। जिनका औसत अंक परीक्षार्थी को दिया जायेगा।

8 मौखिकी परीक्षा विभागाध्यक्ष एवं वाहृय परीक्षक के द्वारा विभागाध्यक्ष के संयोजकत्व में आयोजित की जाएगी।

एम. एड. प्रथम प्रश्नपत्र
शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार

उद्‌देश्य इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

1.दर्शन एवं शिक्षा के मध्य सम्बन्ध एवं शैक्षिक दर्शन के महत्व को समझ सकेगें।

2.पाश्चात्य दर्शन की विभिन्न शाखाओं के मध्य अन्तर कर सकेगें।

3. भारतीय दर्शन और पाश्चात्य दर्शन की विभिन्न शाखाओं की व्याख्या कर सकेगें।

4. शिक्षा की आधुनिक प्रवृत्तियों को समझ सकेगें।

5. सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका का मूल्यांकन कर सकेगें।

6. शिक्षा के अर्थशास्त्र का विश्लेषण कर सकेगें।

खण्ड I
शिक्षा का दार्शनिक आधार

इकाई 1अ. शिक्षा और दर्शन में सम्बन्ध, शैक्षिक दर्शन का महत्व, विभिन्न राजनैतिक व्यवस्थाओं में शिक्षा का अर्थ एवं उदे्श्य, पाश्चात्य दर्शन की शाखाएं विचारवाद, यथार्थवाद, प्रकृतिवाद, प्रयोगवाद एवं अस्तित्वबाद शिक्षा के उदे्श्य, पाठ्‌यक्रम, शिक्षण विधियां एवं अनुशासन।

ब. भारतीय दर्शन की शाखाएं: सांख्य, वेदान्त एवं बौद्ध– आधारभूत सिद्धान्त एवं शैक्षिक निहितार्थ। आधुनिक भारतीय शिक्षा दार्शनिकः गांधी, टैगोर, श्री अरविन्द एवं स्वामी विवेकानन्द–प्रतिपादित सिद्धान्त एवं प्रयोग।

इकाई 2क. भारतीय संविधान में निहित राष्ट्रीय मूल्य, शिक्षा एवं मानवाधिकार।

ख. शिक्षा में आधुनिक प्रवृत्तियॉं एवं शैक्षिक नवाचार।

खण्ड II
शिक्षा का सामाजशास्त्रीय आधार

इकाई 3**अ**. समाजशास्त्र का अर्थ एवं क्षेत्र ; समाजशास्त्र एवं शिक्षाशास्त्र में सम्बन्ध, शिक्षा का समाजशास्त्र – प्राचीन एवं नवीन अवधारणा: अर्थ, क्षेत्र , प्रकृति एवं महत्व। समाजशास्त्रीय उपागम एवं शिक्षा, समाजीकरण की अवधारणा। शिक्षा -- परिवार एवं समुदाय , भारतीय समाज के परिप्रेक्ष्य में ।

इकाई 3**ब**. सामाजिक व्यवस्था एवं शिक्षा: शिक्षा का प्रकार्यात्मक एवं संरचनात्मक परिप्रेक्ष्य, सामाजिक व्यवस्था की उप–प्रणाली के रूप में शिक्षा । शिक्षा एवं सामाजिक परिवर्तन : सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा , परिवर्तन के निर्धारक तत्व, शिक्षा की भूमिका, सामाजिक नियत्रण एवं शिक्षा , सामाजिक गतिशीलता – अर्थ , प्रकार , शिक्षा से सम्बन्ध एवं महत्व

इकाई 4 **अ** शिक्षा के संदर्भ में परम्परा एवं आधुनिकता की अवधारणा : आधुनिकरण एवं शिक्षा अर्थ एवं महत्व।

शिक्षा धर्म एवं संस्कृति : अवधारणा सम्बन्ध एवं महत्व।

शिक्षा एवं राजनीति

लोकतंत्र : अर्थ,उद्देश्य एवं विकास में शिक्षा की भूमिका

शैक्षिक अवसरों की समानता : सम्प्रत्यय अवसरों के निर्धारक तत्व सरकारी स्तर पर प्रयास, सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से वंचित वर्ग की शिक्षा एवं इस क्षेत्र में चुनौतियां, उपलब्धियाँ एवं शिक्षक की भूमिका

इकाई 4 **ब** शिक्षा का अर्थशास्त्र : सम्प्रत्यय एवं विकास ,शिक्षा एवं आथिर्क विकास, पूँजी निवेश के रुप में शिक्षा की अवधारणा

शिक्षा एवं देश की मानवीय शक्ति से सम्बधित आवश्यकता

शैक्षिक नियोजन – अर्थ , प्रकार , आवश्यकता

अध्ययन ग्रन्थः

1. नेलर, जार्ज एफ : इन्ट्रोडक्शन टू फिलासफी आ एजुकेशन, जान विली एण्ड सन्स, 1971.
2. बेकर, जान एल मार्डनः फिलासफीज आफ एजुकेशन ,टाटा मेग्राहिल, 1980.
3. तनेजा, बी. आरः सोशियों–फिलासफीकल एप्रोच टू एजुकेशन , एटलांटिक पब्लि, दिल्ली, 1979.
4. वर्मा : फिलासफी आफ इण्डियन एजुकेशन,, मीनाक्षी प्रकाषन, मेरठ, 1989.
5. मारिल एलः पाजिटिव रिलेटिवीज्मः एन इमरजेन्ट एजुकेशन फिलासफी विग्गी, हारपर रो, 1971.
6. सिंह बलजीतः एजुकेशन ऐन इनवेस्टमन्ट , मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ,1984.
7. डी स्कूलिंग सोसाइटीः इवान इलिच, 1973.
8. पाण्डेय के. पी : परस्पेक्टिब्ज इन सोशल फाउन्डेशन आफ एजुकेशन, अमिताभ प्रकाशन, दिल्ली, 1988.
9. पाण्डेय के. पी : नवीन शिक्षा दर्शन, अमिताभ प्रकाशन, दिल्ली, 1988.
10. पाण्डेय रामसकल : शिक्षा दर्शन , विनोद पुस्तक मन्दिर, 1983.

एम. एड. द्वितीय प्रश्नपत्र

<u>शिक्षा का मनोवैज्ञानिक आधार</u>

उद्देश्य इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

1 शिक्षा मनोविज्ञान के अर्थ विषय क्षेत्र इसकी भारतीय एवं पाश्चात्य अवधारणा एवं शिक्षक के लिए इसकी प्रासंगिकता को समझ सकेगें।

2 अधिगम के विभिन्न सिद्धान्तों के मध्य अन्तर कर सकेंगें

3 विकास की विभिन्न अवस्थाओं मे होने वाले परिवर्तनों एवं विकास सम्बन्धी विभिन्न सिद्धान्तों से परिचित हों सकेगें ।

4 अभिप्रेरणा एवं समंजन के सम्प्रत्ययों एवं उनके शैक्षिक निहितार्थ कों समझ सकेगें

5 व्यक्तित्व के सम्प्रत्यय एवं उसके विभिन्न सिद्धान्तों की व्याख्या कर सकेगें

6 बुद्धि की अवधारणा उसके विभिन्न सिद्धान्तों एवं सांवेगिक बुद्धि को जान सकेगें

7 विशिष्ट बालकों की पहचान एवं शिक्षा व्यवस्था एवं समेकित शिक्षा के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेगें ।

इकाई 1 **अ**. शिक्षा मनोविज्ञान : अर्थ , विषय क्षेत्र ,भारतीय एवं पाश्चात्य अवधारणा, शिक्षक की दृष्टि से शिक्षा मनोविज्ञान का प्रासंगिकता ।

ब. विकासः अर्थ, विकास एवं वृद्वि मे अन्तर , संज्ञानात्मक , सामाजिक एंव संवेगात्मक विकासः मुख्य विशेषताऍ, एवं शैक्षिक निहितार्थ , विकास की भारतीय अवधारणा (संस्कारों के विशेष संदर्भ में)।

स. अधिगम : अर्थ, गैने का अधिगम पदानुक्रम, अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक, अधिगम का अन्तरण : अर्थ ,सिद्धान्त एवं उसके शैक्षिक निहितार्थ ।

इकाई 2 **अ**. अधिगम का साहचर्यात्मक सिद्धान्तः हल्ल का आवश्यकता ह्मसन का सिद्धान्त , प्रमुख बिन्दु एवं शैक्षिक निहितार्थ ।

ब. अधिगम का संज्ञानात्मक सिद्धान्त : गेस्टाल्टवादी एवं टॉलमैन का सिद्धान्त एवं प्रमुख बिन्दु एवं शैक्षिक निहितार्थ ।

इकाई 3 **अ**. अभिप्रेरणा : सम्प्रत्यय, भारतीय अवधारणा : पुरूषार्थ चतुष्टय (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) एवं शैक्षिक निहितार्थ ।

ब. समंजन : अर्थ, प्रक्रिया, समंजन के प्रतिमान, मानसिक द्वन्द्व तथा प्रतिरक्षा क्रियाविधि, सुसंमजित व्यक्ति की विशेषताऍ । मानसिक स्वास्थ्य एवं आरोग्य : अर्थ, प्रमुख बिन्दु एवं शैक्षिक निहितार्थ ।

स विशिष्ट बालकः शैक्षिक दृष्टि से पिछडे, प्रतिभाशाली तथा मंदितमना बालक– पहचान एवं शिक्षा व्यवस्था। समावेशी शिक्षा – अर्थ प्रमुख बिन्दु एवं शैक्षिक निहितार्थ । सृजनात्मकता : अर्थ प्रकिया पहचान एवं संवर्धन ,समस्या समाधान : स्वरुप प्रकिया एवं शैक्षिक निहितार्थ

इकाई 4**अ**. व्यक्तित्व : अर्थ, पंचकोशीय विकास एवं सत्, रज, तम गुण प्रधान व्यक्तित्व एवं उसका शैक्षिक निहितार्थ, व्यक्तित्व की भारतीय अवधारणा ।
व्यक्तित्व की पाश्चात्य अवधारणा एवं सिद्धान्त, विशेषक–आलपोर्ट एवं आइसेन्क मनोविश्लेषणात्मक – फ्रायड एवं एरिकसन मानवतावादी – मासलौ एवं रोजर्स , व्यक्तित्व का मापन ।

ब. बुद्धि : अर्थ, भारतीय (अंतकरण चतुष्टय) एवं पाश्चात्य अवधारणा , प्रमुख बिन्दु, बुद्धि के कतिपय सिद्धान्त : गिलफर्ड एवं गार्डनर की बुद्धि की अवधारणा : प्रमुख बिन्दु एवं शैक्षिक निहितार्थ। सांवेगिक बुद्धि : अर्थ, प्रमुख बिन्दु एवं शैक्षिक निहितार्थ वैयक्तिक भिन्नता : अर्थ एवं प्रकार एवं शैक्षिक निहितार्थ, प्रत्यय निर्माण : अर्थ , प्रक्रिया एवं शैक्षिक निहितार्थ

स समूह गत्यात्मकता : अर्थः समूह प्रक्रिया, कक्षा के वातावरण को अधिगमोन्मुख बनाने में शिक्षक की भूमिका ।

प्रायोगिक कार्य 1 शिक्षा_मनोविज्ञान के किसी भी सम्प्रत्यय पर प्राचीन भारतीय ग्रन्थों से संकलन एवं प्रतिवेदन प्रस्तुतीकरण ।

2 व्यक्तित्व, अधिगम , बुद्धि मे से किसी एक सम्प्रत्यय पर प्रस्तुत नवीन सिद्धान्त का आलोचनात्मक विश्लेषण एवं प्रतिवेदन प्रस्तुतीकरण ।

अध्ययन ग्रन्थः

1. Krik,S and Galabor,J : Educating Exception Children (6th Edition)
Bostan House, Miffin, 1989.

2. Kolberg , L: Philosophy of Moral Development, New York : Harper and Row, 1981
3. kundu,C.L. : Education Psychology, Starling Publisher, 1983
4. Gupta S.P.and Gupta, A.: Uchhater Siksha Manovigyan, Sarda Pustak Bhavan, University road, Allahabad, 2004
5. Tomar, L : Bharatiya Siksha Manovigyan ke Adhar, Vidya Bharti Prakashan, Kurukshetra
6. Dutt, N.K.: The Psychological Foundation of Education, Dowaba House, Delhi, 1974
7. Pandey, K.P.: Naveen Siksha Manovigyan, Viswavidyalaya Prakashan, 2007
8. Pandey,Ram Sakal : Prachin Bharat ke Shiksha Manishi, Sarda Pustak Bhavan, University road, Allahabad, 2002
9. Pandey, K and Srivastava, S.S. : Siksha Manovigyan:Bhartitya evam Paschatya Awdharda,Tata Mcgraw Hill,New Delhi,2007
10. Sharma ,R and Sharma, R.:Bhartitya Manovigyan, Atlantic Publisher and Distributers, New Delhi, 1962.
11. Hurlock, E.: Psychological Development – A life span approach, Mcgraw Hill, 5th ed. 1983.
12. Hilgard and Bower : Theories of Learning, Tata Mcgraw Hill,New Delhi, 1982
13. Hull, Kelvin,S, Lindzey and Campbell : Theories of Personality, IVth ed., Jane Villy and Sons,New York, 1992

एम0एड0 तृतीय प्रश्न पत्र

<u>शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी</u>

उद्देश्य इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

1 शैक्षिक अनुसंधान का अर्थ, भारतीय संदर्भ में शैक्षिक अनुसंधान के क्षेत्रों को समझ सकेगा
2 अनुसंधान के विविध स्वरूपों (मौलिक, व्यवहृत एवं कियात्मक) में अन्तर कर सकेगा
3 शैक्षिक अनुसंधान में विधियों को जान सकेगा ।
4 शैक्षिक अनुसंधान की प्रकिया को समझ सकेगा ।
5 शैक्षिक शोध में साख्य संग्राहक हेतू प्रयुक्त उपकरणों का इस्तमाल कर सकेगा
6 प्रस्तावित शोध की रूपरेखा एवं शोध प्रतिवंदन के प्रारूप लेखन विधि को जान सकेगा
7 आकडों के विश्लेषण एवं व्याक्ष्या के लिये साख्यिकीय विधियों का प्रयोग कर सकेगा ।

(खण्ड अ)

इकाई 1.

(अ) शैक्षिक अनुसंधान से तात्पर्य, क्षेत्र, शैक्षिक अनुसंधान के विविध स्वरूप– मौलिक, व्यवहृत एवं कियात्मक अनुसंधान– तीनों के उद्देश्य, समस्या की प्रकृति, विधि एवं शोध परिणामों के उपयोग की द्ष्टि से विभेद ।

(ब) शैक्षिक अनुसंधान की विधियां– ऐतिहासिक , वर्णनात्मक, सर्वेक्षण, प्रयोगात्मक, कार्योत्तर एवं व्यष्टि अध्ययन की प्रणाली, निहित उपकम एवं अपेक्षित सावधानियॉ ,गुणात्मक शोध ।

(स) शैक्षिक अनुसंधान की प्रकिया–

क– समस्या की स्थापना– समस्या का चुनाव, परिभाषीकरण एवं सीमांकन।
ख– परिकल्पना निर्माण– प्रकिया, स्रोत एवं अच्छी परिकल्पना की विशेषताएँ।
ग– परिकल्पना परीक्षण।
घ– सामान्यीकरण एवं निष्कर्ष निरूपण।

इकाई 2.

(अ) शैक्षिक शोध में समग्र निर्धारण एवं प्रतिदर्श– प्रतिचयन विधियां, शोध के समग्र से तात्पर्य, प्रतिदर्श की आवश्यकता, अच्छे प्रतिदर्श की विशेषताएं, प्रतिदर्श प्रतिचयन की सम्भाव्यता एवं असम्भाव्यता पर आधारित विधियां ।

(ब) आधार सामग्री के संकलन हेतु प्रयुक्त शोध उपकरण, शैक्षिक शोध –उपकरणों की विशेषताएं, उनकी प्रयोग विधि एवं अपेक्षित सावधानियां, प्रश्नावली, साक्षात्कार, प्रेक्षण, निर्धारण मापनी, परीक्षण समाजमितिक प्रविधियां, सामान्य परिचय एवं इनके प्रयोग में निहित सावधानियां।

(स)

क – शोध प्रतिवेदन– प्रतिवेदन के प्रारूप लेखन विधि एवं प्रयुक्त विशेष प्रकार के लेखन स्वरूप।

ख– प्रस्तावित शोध के लिए रूपरेखा प्रस्तुत करना– प्रारूप एवं सावधानियां।

खण्ड ब

इकाई 3 (अ) केन्द्रवर्ती मान– मध्यमान, मध्यांकमान एवं बहुलांकमान गणना विधि एवं प्रयोग।
विचलनमान– विस्तार, मध्यमान विचलन, प्रमाणिक विचलन एवं चतुर्थांश विचलनः गणना बिधि एवं प्रयोग।
शतांशमान एवं शतांश अनुस्थिति ज्ञात करने की विधि एवं उपयोगिता।

(ब) प्रदत्तों का बिन्दुरेखीय प्रदर्शन।

(स) सहसम्बन्ध– सहसम्बन्ध से तात्पर्य, स्पीयरमैन एवं कार्लपियर्सन की बिधि द्वारा सहसम्बन्ध गुणांक ज्ञात करना एवं परिणामों की व्याख्या, आंशिक सहसम्बन्ध एवं बहुचरीय सहसम्बन्ध।

इकाई 4

(अ) सामान्य सम्भाव्यता वक्र की विशेषताएं एवं प्रयोग विधियां

(ब) अनुमान एवं विभ्रम की सांख्यिकी की विश्वसनीयताः मध्यमान की सार्थकता, दो मध्यमानों के बीच अन्तरों की सार्थकता की जांच करना। सदिश एवं निदिश परीक्षाएं, त्रुटियों के प्रकार। चरता विश्लेषणः अन्तर्निहित मान्यता एवं एकल गणना विधि

(स) काई स्क्वेयर एवं परस्पर निर्भरता गुणांक, गणना एवं प्रयोग विधियां

अध्ययन ग्रन्थः

1. टकमैन ब्रूस डब्ल्यू : कन्डक्टिंग एजुकेशनल रिसर्च द्वितीय संस्सकरण, हारकोर्ट ब्रूस 1987.
2. एन इन्ट्रोडक्शन टु एजुकेशनल रिसर्च, एम. डब्ल्यू ट्रवर्स ;तृतीय संस्सकरणद्धए द मैकमिलन कम्पनी 1989.
3. एन इन्ट्रोडक्शन टु एजुकेशनल एण्ड साइकोलॉजिकल रिसर्चः डॉ. ए. वर्मा, एषिया पब्लिषिंग हाउस, 1981.
4. फाउन्डेषन आफ विहेवियरल रिसर्च– फ्रेड एन. कार्लिंगर, सुरजीत पब्लि., कमला नगर, दिल्ली, 1973.
5. स्टेटीकल्स एनेलसिस इन साइकालॉजी एण्ड एजुकेशन : जार्ज ए. फर्ग्यूसन पांचवा संस्करण, मेग्राहिल इन्टरनेषनल बुक कम्पनी, 1981.
6. अन्डरस्टैडिंग एजुकेशनल रिसर्च, बान डलेन, मेग्राहिल बुक कं0 तृतीय संस्करण 1973.
7. रिसर्च मैथड्स इन एजुकेशन– लुबिस कोहन तथा लारेंस मेनियन, कूप हेल्प, लन्दन, 1980.
8. एक्षन रिसर्च टू इम्प्रूव एजुकेशनल प्रैक्टिसेजः स्टिफेन एम. कोरी. रीसर्च कालेज कोलम्बिया, 1053.
9. फण्डामेण्टल आफ एजुकेशनल रिसर्चः डॉ. के. पी. पाण्डेय, अमिताभ प्रकाषन, 1985.
10 षिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधानः डॉ. के. पी. पाण्डेय, अमिताभ प्रकाषन, तृतीय संस्करण, 1988.
11. मनोविज्ञान और षिक्षा में साख्यिकीः डॉ. के. पी. पाण्डेय, दुजाबा हाउस, तृतीय परिवर्द्धित संस्करण, 1985.

चतुर्थ एवं पंचम प्रश्नपत्र

शिक्षण व्यवहार की तकनालाजी

उद्देश्य इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी—

1 विद्यार्थियों में विश्व स्तर पर शिक्षा के क्षेन्नों में हुए परिवर्तनों की जानकारी होगी ।
विद्यार्थी

इकाई 1अ. तकानालॉजी— तात्पर्य, क्षेत्र एवं समकालीन प्रवृत्तियॉ, व्यवहार तकनालॉजी, अनुदउेषन तकनालॉजी, षिक्षण तकनालॉजी, अनुदेषनात्मक रूपरेखा— प्रकृति एवं विषय क्षेत्र ।

ब. षिक्षण अधिगम सम्बन्धः षिक्षण की प्रकारता, षिक्षण की अवस्थाऍ एवं उनकी संकियाऍ।

स. षिक्षण अधिगम के स्तरः स्मृति स्तर, अवबोध स्तर, विमर्षी स्तर— स्वरूप अर्न्तनिहित सिद्धान्त, षिक्षण एवं परीक्षण विधि ।

इकाई 2अ. अधिगम के विभिन्न प्रकार— कौषल, वाचिक ज्ञान, सम्प्रत्यय, नियम एवं समस्या समाधन अधिगम के षिक्षण में निहित सोपान।

ब. षिक्षण के प्रतिमान— सम्प्रत्यय, आवष्यकता एवं आवष्यक तत्व, षिक्षण के प्रतिमानों का वर्गीकरण, षिक्षण के कुछ चुने हुए प्रतिमान— आधारभूत षिक्षण प्रतिमान, स्कूल अधिगम प्रतिमान, सम्प्रत्यय सम्प्राप्ति प्रतिमान तथा मनोवैज्ञानिक प्रतिमान— अवयव, विषेषताऍ षिक्षक के लिए निहितार्थ

इकाई 3अ. षिक्षण व्यवहार की धारणा, विषेषताऍ एवं स्वरूप, कक्षा व्यवहार के क्रमिक स्वरूप, आब्यूह रचना एवं युक्तियॉ।

ब. षिक्षण व्यवहार के आषोधन की विधियॉ— सूक्ष्म षिक्षण, अनुरूपित षिक्षण, सम्प्रत्यय एवं अनुप्रयोग।

स. षिक्षण का व्यवस्थित प्रेक्षण— फ्लैण्डर्स अनर्क्रिया विष्लेषण, श्रेणियॉ पारस्परिक अनुवर्ग विधि एवं समकक्ष वार्ता श्रेणियॉ ।

इकाई 4अ. सम्प्रेषण एवं षिक्षण सम्प्रेषण की संरचना— सिद्धान्त, प्रकार एवं प्रक्रिया, सम्प्रेषण एवं माध्यम— माध्यमों का वर्गीकरण।

ब. अभिक्रमित अनुदेषन— उत्पत्ति, अवधारणा एवं प्रकारता— रेखीय, षाखीय एवं श्रृंखलित, अभिक्रम का निर्माण, अभिक्रम का लेखन एवं मूल्यांकन, षिक्षण में कम्प्यूटर सहअनुदेषन तथा सूचना प्रद्यौगिकी का योगदान।

प्रयोगात्मक कार्यः

प्रत्येक अभ्यर्थी को किसी एक षिक्षण प्रतिमान पर आधारित षिक्षण योजना एवं किन्ही दो व्यवस्थित प्रेक्षण विधियों का प्रयोग करते हुए कम से कम 10 अधात्री मैट्रिक्स निर्मित करने होगें। इनका मूल्यांकन विभागाध्यक्ष के संयोजकत्व में गठित उपसमिति करेगी जिसके लिए 25 अंक नियत होंगे।

अध्ययन ग्रन्थः

1. पासी वी. के., विकर्मिंग वेटर टीचर, ए माइक्रो टीचिंग एप्रोच साहित्य, मुद्रण, अहमदाबाद, 1975.

2 सिंह त्रिभुवन एवं सिंह प्रभाकर, षिक्षण अभ्यास के सोपान, भारत भारती

प्रकाषन, जौनपुर 1984.
3. सिंह एल.सी. एवं षर्मा आर. डी., माइक्रो टीचिंग, थ्योरी एण्ड प्रैक्टिस नेषनल साइकोलाजिकल कारपोरेषन, आगरा, 1991.
4. ब्राउडी एल. माडल्स आफ टीचिंग, प्रेक्टिस हाल आफॅ आस्ट्रेलिया, आस्ट्रेलिया 1972.
5. जायस ब्रूष एवं वील मार्षाः माडल्स आफ टीचिंग, सोसाइटी फार एजुकेषनल रिसर्च एण्ड डेवलपमेन्ट, बरौदा 1991.
7. डिसको जॉन पीः एजुकेषनल ठेक्नालॉजीः रीडिंग इन प्रोग्राम्ड इन्स्ट्रक्षन, लन्दन, हान्ट रिनेहार्ट एण्ड विन्स्टोन, 1988.
8. सम्पत के. तथा अन्य, इन्सट्रक्षन टू एजुकेषनल टेक्नालॉजी, नयी दिल्ली, स्टर्लिंग पब्लिषर्स प्राइवेट लिमिटेड, 1988.
9. षर्मा आर. ए., षैक्षिक तकनीकी, लायन बुक डिपो, मेरठ 1990ः मित्तल संन्तोष षैक्षिक तकनीकी, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1995.
10. अग्रवाल जे.सी. एसेन्सियल्स आफ एजुकेषनल टेक्नालॉजीः टीचिंग लर्निंग एनोवेषन इन एजुकेषन, विकास पब्लिषिंग प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली.
11 दास आर. सी.ः एजुकेषनल टेक्नालॉजी, वेसिक टेक्स्ट.
12. पाण्डेय के.पी.ः मार्डन कान्सेप्ट फार टीचिंग विहेवियर, अनामिका पब्लिषर प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, 1997.
13. पाण्डेय सरला एवं उपाध्याय आर., शैक्षिक तकनालॉजी के आयाम,विश्वविद्यालय प्रकाषन, वाराणसी, 2001.
14. पाण्डेय के.पी. शिक्षण अधिगम की तकनालॉजी, अमिताभ-पकाषन, मेरठ, 1988
15. स्किनर बी. एफ. दी टेक्नालॉजी आफ टीचिंग, मेरेडिथ कारपोरेशन न्यूयार्क, 1968.

चतुर्थ एवं पंचम प्रश्नपत्र

तुलनात्मक शिक्षा

उद्देश्य इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

1 विद्यार्थियों में विश्व स्तर पर शिक्षा के क्षेन्नों में हुए परिवर्तनों की जानकारी होगी ।
2 विद्यार्थी विभिन्न देशों की भौगोलिक,राजनीतिक तथा सांस्कृतिक एवं शैक्षिक परिस्थितियों कों समझ सकेंगें
3 विद्यार्थी विकसित राष्ट्रों के विकास के मूल में शिक्षा की अनिवार्यता को समझ सकेंगें
4 विद्यार्थी विकासशील एवं विकसित राष्ट्रों की विभिन्न शैक्षिक समस्याओं कों परिचित हो सकेंगें
5 विद्यार्थी विभिन्न देशों कें शिक्षा व्यवस्थाओं का समीक्षात्मक अध्ययन कर अपने कौशल एवं चिंतन में परिवर्तन कर सकेगें
6 विद्यार्थी ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस तथा भारत के शैक्षिक परिस्थितियों का तुलनात्मक अध्ययन कर सकेंगे

इकाई 1अ–तुलनात्मक शिक्षा का अर्थ क्षेत्र विकास उद्देश्य, एवं अध्ययन विधियां
ब– तुलनात्मक शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारक।
राप्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के विकास में अंतर्राप्ट्रीय सहयोग का

इकाई 2 अ भारत तथा ब्रिटेन में शिक्षा का स्वरुप एवं संरचना एवं संगठन
ब भारत तथा ब्रिटेन के प्राथमिक, माध्यमिक एव उच्च शिक्षा के शैक्षिक संरचना का स्वरुप एवं समस्यायें
स ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस तथा भारत के शिक्षा स्वरुप संगठन एवं उसकी समस्यायें

इकाई 3अ– ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस तथा भारत की शैक्षिक संरचना एवं कार्यपद्वति
ब तकनीकि एवं व्यावसायिक शिक्षा का भारत के लिए निहितार्थ

इकाई 4अ– भारत, फ्रांस व अमेरिका मे शैक्षिक स्वायत्तता ।

ब– अमेरिका, ब्रिटेन व भारत में दूरस्थ शिक्षा एवं भारत के लिए निहितार्थ

अध्ययन ग्रन्थः

1. नेशनल सिस्टम आफ एजुकेशनलः क्रेमर तथा काउन।
2. एजुकेशन इन इण्डियाः टुडे एण्ड टुमारो : एन.एन. मुखर्जी।
3. न्यू इरा इन एजुकेशनः केन्डल।
4. एजुकेशन इन ग्रेट ब्रिटेनः एच. सी. डेन्ट।
5. यूनिवर्सिटीज, ब्रिटिश, अफ्रीकन एण्ड जापानीजः एरिक एश. बी।
6. भारतीय शिक्षा आयोग ;1964–1966द्ध.
7. तुलनात्मक शिक्षा, डा. के. पी. पाण्डेय ;सं0द्ध
8. न्यू एजुकेशन पालिसी–प्रोग्राम आफ एक्षन ;1986द्ध.
9. कम्परेटिव एजुकेशनः डा. के. पी. पाण्डेय ;सं0द्ध

चतुर्थ एवं पंचम प्रश्नपत्र

शिक्षा में निर्देशन तथा परामर्श

उद्देश्य इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

1 अपने दैनिक जीवन में निर्देशन के महत्तव एवं उपयोग को समझ सकेगें ।

2 निर्देशन के सिद्धान्त अन्तर्निहित मान्यताऍ आधुनिक प्रवृत्तिया एवं समस्याओं को जान सकेंगे।

3 निर्देशन तथा परामर्श के विभिन्न प्रकारों को समझ सकेगें।

4 निर्देशन तथा परामर्श के विभिन्न तकनीकि एवं उपागमों का समस्या समाधान में प्रयोग कर सकेगें।

5 निर्देशन के विभिन्न मूल्यांकनो एवं मनोवैज्ञानिको एवं प्रविधियों का प्रयोग कर सकेगें।

6 निर्देशन तथा परामर्श के विभिन्न उपकरणों एवं प्रविधियों को समझ सकेगें।

इकाई 1 अ. निर्देशन –अर्थ , आवश्यकता, क्षेत्र, सिद्धान्त ,मान्यताए ,प्रकृति एवं आधुनिक प्रवृत्तियॉ।

ब भारत में निर्देशन आन्दोलन का इतिहास, विभिन्न शिक्षा आयोगों में निर्देशन से सम्बन्धित संस्तुतियॉ ।

स भारतीय सन्दर्भ में निर्देशन की वर्तमान स्थिति व समस्याएँ।

इकाई 2 अ. निर्देशन के प्रकार– शैक्षिक, व्यावसायिक, व्यक्तिगत– उद्देश्य, अन्तर एवं प्रयुक्त प्रविधियॉ।

ब. विद्यालयो में निर्देशन कार्यक्रमों का संगठन एवं प्रशासन ।

इकाई 3अ. –शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर निर्देशन सेवाऍ

– निर्देशन सेवाओं के प्रकार

1. सूचना सेवा
2. व्यक्तिगत–सूचना संग्रह
3. व्यावसायिक सूचनाः स्रोत, संग्रह व प्रसारण
4. परामर्श सेवा
5. स्थापन सेवा
6. अनुवर्तन सेवा
7. शोध सेवाऍ
8. उपक्रम सेवा

ब परामर्शः अर्थ सिद्धान्त सोपान एव, प्रविधियॉ परामर्श की प्रक्रिया तथा अच्छे परामर्शक की विशेषतायें।

इकाई 4अ. निर्देशन के विधियॉ एवं उपकरण निर्देशन में मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मूल्यांकन।

ब निर्देशन कार्यक्रम का मूल्यांकन– मूल्यांकन की विभिन्न प्रविधियॉ एवं उपयोगिता।

प्रयोगात्मक कार्य

– निर्देशन हेतु 5छात्रो की समस्याओं के निदान हेतु व्यष्टि अध्ययन के आधार पर उपवोधन सत्र चलाकर प्रतिवेदन प्रस्तुत करना।

– किन्ही 2 मूल्यांकन उपकरणों का निर्देशन हेतु अनुप्रयोग करना उसका प्रतिवेदन तैयार करना।

चतुर्थ एवं पंचम प्रश्नपत्र

दूरस्थ शिक्षा

उद्देश्य इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

1. दूरस्थ शिक्षा के सम्प्रत्यय एवं इसकी भारत एवं विदेशों में प्रासंगिकता से अवगत हो सकेगें।
2. दूरस्थ शिक्षा में विद्यार्थी एवं शिक्षक के स्वरुप दायित्व एवं उनसे सम्बंधित विभिन्न सम्सयाओं को समझ सकेगें।
3. दूरस्थ शिक्षा में प्रयुक्त विभिन्न माध्यमों कें मध्य अन्तर कर सकेगें।
4. दूरस्थ शिक्षा में आत्म अनुदेशित पाठ्य सामग्री के निर्माण की प्रक्रिया को जान सकेगें।
5. दूरस्थ शिक्षा के संगठनात्मक स्वरूप का मूल्याकंन कर सकेंगें।
6. दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में किये जा रहे शोधों से परिचित हो सकेगे।

इकाई 1अ. दूरस्थ शिक्षा– सम्प्रत्यय, आवश्यकता अध्ययन क्षेत्र एवं वर्तमान शैक्षिक सन्दर्भ में इसकी प्रासंगिकता। दूरस्थ शिक्षा का भारत में विकास एवं वर्तमान स्थिति एवं अन्य देशों यथा– चीन, कनाडा, इग्लैण्ड अमेरिका एवं फ्रांस में इसकी स्थिति ।

ब. दूरस्थ शिक्षा का दार्शनिक आधार– माइकल मूर, चार्ल्स बेडेमेयर, होमबर्ग एवं पीटर्स का सिद्धान्त एवं उसका शैक्षिक निहितार्थ ।

इकाई 2अ. दूरस्थ शिक्षाएवं शिक्षक : स्वरूप, दायित्व, योग्यता, समस्याएॅ एवं प्रशिक्षण।

ब. दूरस्थ शिक्षा एवं विद्यार्थीः स्वरूप, विशेषताएॅ, विद्यार्थी सहायता सेवायें एवं दूरस्थ शिक्षा की प्रकृति की दृष्टि से उसका प्रासंगौचित्य।

इकाई 3अ. दूरस्थ शिक्षा एवं माध्यम– मुद्रित एवं अमुद्रित माध्यम दूरस्थ शिक्षा मे इनका उपयोग मुद्रित सामग्री– निर्माण की प्रक्रिया, अपेक्षित सावधानियॉ,

ब. दूरस्थ शिक्षा का संगठनः स्वरूप, क्षेत्रीय एवं स्थानीय अध्ययन केन्द्र– स्वरूप, कार्यविधि एवं प्रासंगिकता ।

इकाई 4अ. दूरस्थ शिक्षा में मूल्यांकन की अवधारणा– विभिन्न प्रविधियॉ एवं उनका मूल्याकंन में अनुप्रयोग

ब. दूरस्थ शिक्षा में शोघ, वर्तमान स्थिति,एवं भविष्य में शोध के प्रमुख बिन्दु ।

प्रयोगात्मक कार्य

1 किसी दूरस्थ शिक्षा के अध्ययन केन्द्र का व्यष्टि अध्ययन एवं प्रतिवेदन प्रस्तुतिकरण।
2 किसी भी प्रकरण पर आत्म अनुदेशित पाठ्य सामग्री के निर्माण।
3 एक दत्तकार्य का दूरस्थ शिक्षा में प्रयुक्त मूल्याकंन प्रविधि का प्रयोग कर के मूल्याकंन।

चतुर्थ एवं पंचम प्रश्नपत्र

<u>कम्प्यूटर सअधिगम एवं शिक्षण</u>

उद्देश्य इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

1 भाषा तथा अन्य विषयों के शिक्षण–अधिगम में कम्प्यूटर की उपयोगिता को जान सकेगें।

2 कम्प्यूटर हार्डवेयर तथा साफ्टवेयर से सम्बंधित जानकारी प्राप्त कर सकेगें।
3 इन्टरनेट की उपयोगिता एवं क्रिया प्रणाली को समझ सकेगें।
4 कम्प्यूटर के लिये अभिक्रम का निमार्ण कर सकेगें।
5 सूचना प्राद्योगिकी के क्षेत्र एवं अद्युनातन प्रवृत्तियों से परिचित हो सकेंगे।
6 कम्प्यूटर अधिगम के क्षेत्र में किये जा रहे शोधों की व्याख्या कर सकेंगे।

इकाई 1अ. भाषा तथा अन्य विषयों के शिक्षण–अधिगम में कम्प्यूटर की भूमिकाः अधिगम पर्यावरण में कम्प्यूटर की भूमिका, कम्प्यूटर सहअनुदेशन का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य तथा उसका सामाजिक, शैक्षिक एवं प्राविधिक निहितार्थ, भारतीय विद्यालयों में कम्प्यूटर ।

ब. माइक्रो कम्प्यूटरः अदा (इनपुट) तथा प्रदा (आउटपुट) प्रविधियॉ कम्प्यूटर पेरीफेरल्स (वाह्यतन्त्र)

इकाई 2अ. कम्प्यूटर हार्डवेयर तथा साफ्टवेयर– उपयोगी साफ्टवेयर का परिचय, आपरेटिंग सिस्टम और कम्प्यूटर सम्बन्धी उपयोगी भाषा ।

ब. इन्टरनेट की अवधारणा, मल्टी मीडिया तथा ग्राफिक्स के बारे में सामान्य जानकारी।

इकाई 3अ. सूचना प्रद्यौगिकी एवं शिक्षा।

ब. कम्प्यूटर की शिक्षा के क्षेत्र में उपयोगिता, कम्प्यूटर साफ्टवेयर निर्माण विधि, योजना अभिकल्प (डिजाइन), योजना (प्रोजेक्ट) को अभिकल्पित करना, उसका कार्यान्यवन एवं मानिटरिंग

इकाई 4अ. कम्प्यूटर सह–अनुदेशन के क्षेत्र में अपेक्षित शोध की दशाएँः शोध की रूपरेखा निर्मित करना।

ब. कम्प्यूटर पर आधारित अधिगम पैकेज विज्ञान तथा अन्य विषयों एवं उसका मूल्यांकन, पुस्तकालय व्यवस्था तथा विद्यालयों में कम्प्यूटर की व्यवस्था हेतु अपेक्षित सावधानियॉ ।

प्रयोगात्मक कार्य

1. कम्प्यूटर के लिये अभिक्रम निर्मित करना।
2. कुछ चुने हुए विषयों में कम्प्यूटर का अनुप्रयोग करते हुए पांच से दस पाठों का शिक्षण ।

चतुर्थ एवं पंचम प्रश्नपत्र

<u>अभिक्रमित अधिगम की तकनालाजी एवं शैक्षिक साफटवेयर अभिकल्प</u>

उद्देश्य इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

1 अभिक्रमित अधिगम का ऐतिहासिक एवं मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य को समझ सकेगें।
2 अभिक्रमित अधिगम के विभिन्न प्रकारों के मध्य अन्तर कर सकेगें।
3 स्वामित्व अधिगम के सम्प्रत्यय को जान सकेगें।
4 अभिक्रम लेखन कर सकेगें।
5 अभिक्रम का मूल्यांकन कर सकेगें।
6 अभिक्रम हेतु निकष परखों की निर्माण एवं मानकीकरण कर सकेगें।

इकाई 1अ. अभिक्रमित अधिगम का ऐतिहासिक एवं मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य– थार्नडाइक का सम्बन्धबाद एवं क्रिया प्रसूत अनुवन्धन– अभिक्रमित अधिगम से इनका सम्बन्ध ।
ब. अभिक्रमित अधिगम के प्रकार– रेखीय अभिक्रम की विषेषताएँ, मान्यताएँ, प्रकारता एवं उदाहरण, षाखीय अभिक्रम एवं श्रृंखलित–अभिक्रम बुनियादी मान्यताएं इनके उदाहरण।

इकाई 2अ. शाखीय अभिक्रम– विशेषताएँ, प्रकारता, मान्यताएँ, सोपान एवं उदाहरण।
ब. अवरोही अभिक्रम– विशेषताएँ, मान्यताएँ, सोपान एवं उदाहरण ।

इकाई 3अ. स्वामित्व अधिगम, तात्पर्य, सोपान एवं उदाहरण एवं विलक्षणता, शिक्षण यन्त्र तात्पर्य एवं विषेषताएँ ।
ब. अभिक्रम का नियोजन– प्रकरण का चुनाव, विषय वस्तु विश्लेषण, व्यवहारपरक उद्देश्यों से तात्पर्य एवं उनके उदाहरण, निकष परख की निर्माण विधि ।

इकाई 4अ. अभिक्रम लेखन–अभिक्रम के संरचनात्मक एवं प्रकार्यात्मक तत्व, पदों (फ्रेम्स) के प्रकार, प्राथमिक लेपन (प्राइमिंग) तथा अनुवोधक (प्राम्पटिंग) एवं अनुबोधकों के प्रकार, पदों को अनुक्रमित करनाः तार्किक एवं इन्द्रियानुभविक अनुक्रम, अभिक्रम का सम्पादन एवं संषोधन, संपादन के प्रकार
ब. अभिक्रम का परीक्षण एवं मूल्यांकन– व्यक्तिगत, लघु समूह एवं क्षेत्र परीक्षण अभिक्रम का त्रुटिदर, सूचना घनत्व एवं 90/90 मानक दर ।

प्रायोगिक कार्यः

किसी विषय से सम्बन्धित शीर्षक पर रेखीय अथवा शाखीय शैली में अभिक्रम प्रस्तुत करना। इस अभिक्रम में अन्त्य (टर्मिनल) व्यवहार का उल्लेख, उद्देश्यों का व्यवहारपरक (संक्रियात्मक) ढंग से निरूपण, अभिक्रम का कम से कम 100–150 पदों में प्रस्तुतीकरण एवं उससे सम्बन्धित "निकष परख" निर्मित करना होगा।

अध्ययन ग्रन्थः

1. प्रोग्राम्ड इन्स्ट्रक्शन–मेनुवल आफ प्रोग्रामिंग टेक्नीक्सः डेल. एन. ब्रथोअर, एजुकेशन मेथड्स, शिकागो, 1963.

2. द लर्निंग प्रासेस एण्ड प्रोग्राम्ड इन्स्ट्रक्शनः ए0 व0 जे0 ग्रीन, होन्ट, राईनहार्ट एण्ड विन्सटन, 1962.
3. प्रिपेयरिंग इन्स्ट्रक्शनल आब्जेक्टिव फार प्रोग्राम्ड इन्स्ट्रक्शन, रावर्ट मेगर, पीरान पब्लिशर्स, 1962.
4. गुड फ्रेन्ड्स एण्ड बेडः सुषन एम0 मार्वल, मार्वल, जॉन विली एण्ड सन्स, 1969.
5. प्रेक्टिकल प्रोग्रामिंगः पीटर पाइप, राइनहार्ट एण्ड विन्सटन, 1965.
6. ए फर्स्ट कोर्स इन इन्स्ट्रक्शन टेक्नालॉजी, डा. के. पी. पाण्डेय, अमिताभ प्रकाशन, तृतीय संस्करण, 1985.
7. अभिक्रमित अधिगम की तकनालॉजीः के. पी. पाण्डेय, अमिताभ प्रकाशन, तृतीय संस्करण, 1985.
8. ए गाइड टू प्रोग्राम्ड इन्स्ट्रक्शनः रोम पी लिसाट तथा क्लेरेन्स एम. विलियम्स जॉन बिली एण्ड सन्स, 1962.
9. टीचिंग मशीन एण्ड प्रोग्राम्ड इन्स्ट्रक्षनः इन इन्ट्रोडक्शन, एडवर्ड बी0 फ्राई, मेग्राहिल, 1963.

चतुर्थ एवं पंचम प्रश्नपत्र

शैक्षिक प्रबन्ध एवं प्रशासन

उद्देश्य इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

1 शिक्षा में प्रबन्धन के विभिन्न उपागमों के मध्य अन्तर कर सकेगें।
2 शैक्षिक प्रबन्धक के कार्यो को समझ सकेगें।
3 विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण के सम्प्रत्यय की व्याख्या कर सकेगें ।
4 शैक्षिक वित्त एवं वित्तीय प्रशासन की अवधारणा को समझ सकेंगें ।
5 शैक्षिक प्रशासन की संरचना के विभिन्न स्तरों के मध्य अतंर कर सकेंगें ।
6 शैक्षिक प्रवन्ध एवं प्रशासन के क्षेत्र में किये जा रहे शोधों की समीक्षा कर सकेंगे।

इकाई 1अ. शिक्षा में प्रबन्ध एवं प्रशासन के सिद्वान्तों का विकास ; संगठन , प्रबन्ध एवं प्रशासन की अवधारणा एवं उसमें परस्पर सम्बन्ध ;शिक्षा में प्रबन्ध के विभिन्न उपागम।

ब. प्रबन्ध एवं प्रशासन के मुख्य कार्य एवं प्रक्रियाएँ : नियोजन, संगठन ,नेतृत्व, नियत्रण, मूल्यांकन।

इकाई 2अ. शैक्षिक प्रबन्धक की भूमिकाएँ एवं कार्य : शैक्षिक नेतृत्व (संगटनात्मक सीमाएं नेतृत्व एवं प्रशासन) नेतृत्व शैली : मानवीय गुणों के उद्देश्यपूर्ण विकास हेतु अधिगम एवं अनुदेशन ।

ब. पर्यावरण एवं विद्यालय : संगठनात्मक क्लाइमेट– संप्रत्यय एवं मापन । .

इकाई 3अ. केन्द्रीय एवं राज्य स्तर पर शैक्षिक प्रशासन संरचना ; उच्च शिक्षा में शैक्षिक प्रशासन के मुद्दें एवं समस्याएँ ।

ब. शैक्षिक निरीक्षण एवं पर्यवेक्षण :सम्प्रत्यय, क्षेत्र, सिद्वान्त एवं समस्याएँ ।

इकाई 4अ. भारत में शैक्षिक वित्त एवं वित्तीय प्रशासन की अवधारणा का विकासः संक्षिप्त परिचय , बजट एवं उसके प्रकार।

ब. शैक्षिक प्रवन्ध एवं प्रशासन के क्षेत्र में किये जा रहे शोधों ।

प्रयोगात्मक कार्यः

1. संगठनात्मक क्लाइमेट से सम्बन्धित प्रश्नावली का प्रयोग ।
2. किसी प्रदत्त शैक्षिक संस्था का व्यष्टि अध्ययन ।
3. विद्यालय बजट का अध्ययन एवं निर्माण।
4. शैक्षिक प्रबन्धन में प्रणाली उपागम के प्रयोग से यंबंधित प्रदत्त कार्य।
5. शैक्षिक प्रबन्ध एवं प्रशासन के प्रदत्त संदर्भ पुस्तक का पुनरावलोक ।

अध्ययन ग्रन्थः

1 एल.के.ओड़,(1992), शैक्षिक प्रशासन, जयपुर,राजस्थान ग्रंथ अकादमी ।

2 भठनागर,आर.पी. एवं अग्रवाल, विद्या (1986), एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन :नई दिल्ली, इंटरनेशनल प0 हाउस

3 भट्ट, बी.डी. एवं शर्मा, एस.डी (1992), एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन : हैदराबाद, कनिष्क प0 हाउस बुक लिंक कारपोरेशन

4 चतुर्वेदी, आर.एन. (1989),दि एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ हाथर एजुकेशनल इन इंडिया जयपुर, प्रिंटवेल प0

5 गोयल, एस. एल. (2005), मैनेजमेन्ट इन एजुकेशन, नई दिल्ली, ए.पी.एच. प0 कारपोरेशन

6 गुप्ता, एल,डी (1987), एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन, आक्सफार्ड एवं आइ.बी.एच.,

7 माथुर, एस.एस., एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन प्रिसिपल्स एण्ड प्रैक्टिसेस,

8 निस्ट्रैड, आर.ओ एवं अन्य (1983) , सिडनी, एलिन एवं बेकन, इंक

9 राय चौधरी, नमिता (1992), मैनेजमेन्ट इन एजुकेशन, नई दिल्ली, ए0पी0 एच0प0

चतुर्थ एवं पंचम प्रश्नपत्र

विशिष्ट बालकों की शिक्षा

उद्देश्य इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

1 विशिष्ट बालक एवं उनके विशिष्ट षिक्षा की आवष्यकता को समझ सकेंगें ।
2 विकलांगों की समस्याओं को समझ सकेंगें ।
3 पूर्ण बधिर एवं मूक बालकों के लिए विशिष्ट शिक्षा व्यवस्था हेतु अपने सुझााव दे सकेगें ।
4 वंचितों की स्थिति एवं वंचन के कारणों का विश्लेषण कर सकेगें ।
5 भारत एवं विश्व में मानसिक विकलांगता से ग्रस्त बालको के लिए दी जा रही सुविधाओं का मूल्याकंन कर सकेगें ।
6 विशिष्ट बालकों की शिक्षा हेतु अध्ययन सामग्री का निर्माण कर सकेगें ।

इकाई 1अ. विशिष्ट बालक– अर्थ, प्रकार, विशिष्ट शिक्षा की आवश्यकता, उपयोगिता एवं महत्व ।
ब. विकलांग बालक– विकलांगता का अर्थ, विकलांगों की समायोजन समस्यायें, भौतिक एवं सामाजिक सुविधायें, विशिष्ट शिक्षा व्यवस्था, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि एवं विशिष्ट विद्यालय ।
इकाई 2अ. दृष्टि दोष ग्रस्त अथवा सम्पूर्ण रूप से दृष्टिबिहीन बालकः– दृष्टि दोष का अर्थ, पहचान, समायोजन समस्या, विशिष्ट माध्यम, समाज की मुख्य धारा में इन्हे जोडने के सन्दर्भ में शिक्षण व्यवस्था तथा प्रयास।

ब. पूर्ण बधिर अथवा अर्धबधिर बालकः— बधिर का अर्थ, पहचान, समायोजन, समस्या विशिष्ट शिक्षा—व्यवस्था, पाठ्यक्रम, अलग विद्यालय, शिक्षण विधि, शिक्षा माध्यम तथा समाज की मुख्य धारा में इन्हें जोडने के सन्दर्भ में शिक्षण व्यवस्था तथा प्रयास ।

इकाई 3अ. हकलाना या पूर्ण रूप से मूक बालकः— अर्थ, पहचान, समायोजन समस्या, विशिष्ट शिक्षण व्यवस्था, पाठ्यक्रम, अलग विद्यालय, शिक्षण विधि, शिक्षण माध्यम तथा समाज की मुख्य धारा में उन्हें जोडने के सन्दर्भ में शिक्षण व्यवस्था तथा प्रयास।

ब. बंचित बालक एवं उनकी शिक्षाः— वंचित बालक— वंचन का अर्थ, प्रकार, आधुनिक सामाजिक सन्दर्भ में वंचितों की स्थिति (दशा) कारण, बौद्धिक, संवेगात्मक, निष्पत्ति, व्यक्तित्व पर वंचन का प्रभाव, वंचितों को समाज में पुनः स्थापित करने में शिक्षा एवं शिक्षक की भूमिका, शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन एवं सुविधा वंचित बालक, कारण, निवारण, विभिन्न मनोवैज्ञानिक विद्यालयों की स्थापना की आवष्यकता, विशिष्ट शिक्षा व्यवस्था ।

इकाई 4अ. मानसिक न्यूनता— अर्थ, पहचान, मानसिक न्यूनता से ग्रस्त बालकों के प्रकार, शिक्षा प्राप्त करने योग्य मानसिक विकलांग, प्रशिक्षण योग्य मानसिक विकलांग एवं अभिरक्षणीय, संवेगात्मक संतुष्टि के सन्दर्भ में शिक्षा व्यवस्था, उपचारात्मक शिक्षण एवं विशिष्ट पाठ्यक्रम का निर्माण, समाज में इनके पुनर्स्थापन में शिक्षा एवं शिक्षक की भूमिका ।

ब. भारत एवं विश्व में मानसिक विकलांगता से ग्रस्त बालको के लिए दी जाने वाली सुविधायें, मानसिक विकलांगता एवं रोजगारपरक शिक्षा व्यवस्था, विशिष्ट विद्यालय, स्वरूप, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि तथा इन विद्यालयों की भूमिका ।

प्रयोगात्मक कार्यः

निम्नलिखित में से किन्ही एक श्रेणी के बालको का व्यष्टि अध्ययन :

1. विशिष्ट बालकों की किसी एक श्रेणी के लिए विशिष्ट अध्ययन सामग्री का निर्माण ।
2. विशिष्ट बालकों की शिक्षा के लिए प्रयुक्त उपकरण एवं शिक्षात्मक साधनों से जानकारी ।
3. विकलांगता की मात्रा की पहचान हेतु उपयुक्त मूल्यांकन प्रविधि में दक्षता ।

चतुर्थ एवं पंचम प्रश्नपत्र

<u>शान्ति एवं मूल्य शिक्षा</u>

उद्देश्य इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी—

1. मूल्य के सम्प्रत्यय एवं उसकी विभिन्न क्षेणियाँ को समझ सकेंगें।
2. शान्ति की प्रकृति, महत्व एवं द्वन्दों के समाधान की विभिन्न विधियों को जान सकेंगें।
3. शान्ति से समबंधित मूल्यो के संवर्द्धन हेतु विभिन्न प्रविधियों का प्रयोग कर सकेंगें।
4. शान्ति से समबंधित मूल्यो के संवर्द्धन हेतु विभिन्न अभिकरणों यथा गृह, विद्यालय एवं समुदाय की भूमिका का विश्लेषण कर सकेंगें।
5. शान्ति शिक्षा की प्रकृति, उद्देश्य एवं प्रासंगिकता को समझ सकेंगें ।
6. मूल्य शिक्षा एवं शिक्षक प्रशिक्षण में इसकी प्रासंगिकता को जान सकंगें।

ईकाइ 1 अ. शान्ति : अर्थ, प्रकृति एवं वर्तमान वैश्विक संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता , शान्ति के विभिन्न स्रोतः दार्शनिक, धार्मिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक ।

ब. शान्ति का वर्गीकरण : सकारात्मक एवं नकारात्मक शान्ति –सम्प्रत्य,विशेषताऍं, नकारात्मक शान्ति को कम करने के उपाय एवं इस क्षेत्र में भारतीय चिन्तकों का योगदान।

स. शान्ति संवर्द्धन में विभिन्न संगटनों यथा– यूनेस्को की भूमिका।

ईकाइ 2 अ. मूल्य : अर्थ, प्रकृति एवं वर्तमान वैश्विक संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता।

ब. मूल्यों का वर्गीकरण।

स. मूल्यों के विकास में परिवार, विद्यालय एवं समुदाय की भूमिका।

ईकाइ 3 अ शान्ति शिक्षा –अर्थ, उद्देश्य विषय क्षेत्र एवं प्रासंगिकता।

ब. शान्ति शिक्षाके लिए प्रयुक्त विधियों।

स. शान्ति शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे शोध – वर्तमान स्थिति एवं सुझाव।

ईकाइ 4 अ मूल्य शिक्षा –तात्पर्य,स्वरुप, उद्देश्य ,विषय क्षेत्र एवं प्रासंगिकता ।

ब मूल्य शिक्षा एवं मौलिक अधिकार एवं कर्त्तव्य एवं शिक्षक की भूमिका।

स मूल्य शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे शोध – वर्तमान स्थिति एवं सुझाव।

प्रयोगात्मक कार्यः

1 शिक्षकों में मूल्यो के संवर्द्धन हेतु एक परियोजना का निर्माण ।

2 शान्ति से समंबंधित मूल्यो के मापन हेतु एक परिक्षण का निर्माण।

3 आपसी द्वन्दों को सुलझाने के लिए प्रयुक्त विधि का प्रशिक्षण एवं तदनुरुप प्रतिवेदन प्रस्तुतीकरण।

अध्ययन ग्रन्थः

1 गावण्डे, इ0एन0 वैल्यू ओरियेएनटेड एजुकेशन (विजन फार बेटरलिविगं), सरुप एण्ड संस, नई दिल्ली,1995.

2 चक्रवर्त्ती, मो0 वैल्यू एजुकेशन : चेंजिग पर्सपेक्तिव , कनिष्क प0 एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली,1997.

3 जैकब,म0 रिर्सोस बुक फॅार वैल्यू एजुकेशन , इन्सिटटयूट आर्फ वैल्यू एजुकेशन, नई दिल्ली 2002

4 रामा जॅायस, एम0 ह्यूमन राइटस एण्ड इण्डियन वैल्यूज , नेशनल काउसिलं फॅार टीचर एजुकेशन, नई दिल्ली, 1997,

5 फीदर, नार्मन, टी 0 वैल्यूज इन एजुकेशन एण्ड सोसाइटी, द फ्री प्रेस न्यूयार्क, लन्डन, 1975,

6 राजपूत, जे0एस0 (संकलन) सिम्फनी ऑफ ह्यूमन वैल्यूज इन एजुकेशन, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली, 2001

7 ढोलकिया , आर0पी0 इंटरनेशनल ह्यूमन वैल्यूज एण्ड वर्ल्ड रिलीजन्स, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली, 2001

8 गॉंधी के0 एल0 वैल्यू एजुकेशन, नई दिल्ली, ज्ञान प0 हाउस, 1993

9 गुप्ता एन0एल0 ए सर्च फॉर ह्यूमन वैल्यूज, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली, 2001

10 अग्रवाल, जे0सी0 टीचर एण्ड वैल्यू एजुकेशन इन ए डेवलपिंग सोसाइटी, नई दिल्ली, विकास प0 हाउस, 1993